

## हमिचल प्रदेश में फ्लैश फ्लड

### प्रलिस के लयः

हमिचल प्रदेश में फ्लैश फ्लड, [मानसून](#), [फ्लैश फ्लड](#), जलवायु परविरतन पर अंतर-सरकारी पैनल, [भारतीय मौसम वजिज्ञान वभिग](#), [पश्चिमी वकिषोभ](#)

### मेन्स के लयः

हमिचल प्रदेश में फ्लैश फ्लड

## चर्चा में क्यों?

वर्ष 2023 की [मानसूनी](#) बारशि के कारण हमिचल प्रदेश के कई क्षेत्रों में [फ्लैश फ्लड/आकस्मकि बाढ़](#) के कारण जान-माल की अभूतपूर्व क्षति हुई है।

## फ्लैश फ्लड:

### परचियः

- यह घटना **बारशि के दौरान या उसके बाद जल स्तर में हुई अचानक वृद्धि** को संदर्भति करती है।
  - यह अत्यधिक **उच्च क्षेत्रों में छोटी अवधि में घटति होने वाली घटना** है, आमतौर पर वर्षा और फ्लैश फ्लड के बीच छह घंटे से कम का अंतर होता है।
- जल नकिासी लाइनों के अवरुद्ध होने** या जल के प्राकृतकि प्रवाह में बाधा डालने वाले अतकिरण के कारण बाढ़ की स्थति और भी गंभीर हो जाती है।

### कारणः

- ऐसी स्थति **तेज आंधी**, तूफान, उष्णकटबिंधीय झंझावात **युक्त भारी बारशि** या बर्फ से पघिले जल या बर्फ की चादरों या बर्फ के मैदानों पर प्रवाहति होने वाली बर्फ के कारण उत्पन्न हो सकती है।
- बौंध या तटबंध टूटने या भूस्खलन (मलबा प्रवाह) के कारण भी आकस्मकि बाढ़ आ सकती है।

## हमिचल प्रदेश में वर्षा का पैटर्न:

- हमिालय क्षेत्र में **कम समय में अधिक वर्षा होने** का एक उल्लेखनीय पैटर्न देखा गया है।
  - [जलवायु परविरतन पर अंतर-सरकारी पैनल \(Intergovernmental Panel on Climate Change- IPCC\) की छठी आकलन रिपोर्ट](#) में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि भारतीय हमिालय और तटीय क्षेत्र **जलवायु परविरतन से सबसे ज़्यादा प्रभावति होंगे**।
  - [भारत मौसम वजिज्ञान वभिग \(IMD\)](#) के आँकड़ों से पता चलता है कि इस अवधि के दौरान सामान्य वर्षा 720 ममी. से 750 ममी. के बीच होने की उम्मीद है। हालाँकि कुछ मामलों में **वर्ष 2010 में 888 ममी. और वर्ष 2018 में 926.9 ममी.** से अधिक वर्षा हुई।
- हमिचल प्रदेश में वर्ष 2023 में अब तक हुई वर्षा के लयि [पश्चिमी वकिषोभ](#) के साथ [दक्षिण-पश्चिमी मानसून](#) के संयुक्त प्रभाव को ज़मिेदार माना गया है।
  - जून से अब तक **कुल 511 ममी. वर्षा हुई है**।

## हमिचल प्रदेश में आकस्मकि बाढ़ के कारक:

### उदारीकरण द्वारा संचालति वकिासात्मक मॉडल:

- हमिचल प्रदेश के वकिास मॉडल ने प्रगतिकी है तथा पर्वतीय क्षेत्रों को सामाजकि वकिास में दूसरा स्थान दिया है।
- उदारीकरण** से **राजकोषीय सुधार के साथ ही आत्मनरिभरता** की स्थति देखी गई है। हालाँकि प्राकृतकि संसाधनों का दोहन भी बढ़ा है जिससे **पारस्थितिकि तंत्र पर वपिरीत प्रभाव** पड़ा है।

### जलवदियुत परयोजनाएँ:

- जलवदियुत परयोजनाओं के अनयंत्रति निर्माण के कारण **पहाड़ी नदियाँ अब महज जलधाराएँ बनकर रह गई हैं**।

- जब बहुत अधिक बारिश होती है अथवा बादल फटते हैं, तो जल का प्रवाह सुरंगों में बढ़ने और अपशष्टि को नदी के किनारे फँक दिये जाने से आकस्मिक बाढ़ की स्थिति और भी गंभीर हो जाती है।
  - अपशष्टि का अनुचित नपिटान न केवल बरसात के मौसम में भूस्खलन के लिये अनुकूल स्थिति पैदा करता है, बल्कि मनुष्यों द्वारा नषिकाषति अवसाद नदी घाटियों को अवरोध कर देता है जिससे नदी का मार्ग बदल जाता है और अतः प्रवाह के परिणामस्वरूप आकस्मिक बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
- पर्यटन और सड़क मार्ग का वसितार:
  - आवश्यक भू-वैज्ञानिक अध्ययनों को दरकिनार करते हुए पर्यटन-केंद्रित सड़क मार्ग का वसितार करते हुए चार-लेन और दो-लेन वाली सड़कों का निर्माण किया गया है।
  - सड़क निर्माण के दौरान पहाड़ों की ऊर्ध्वाधर कटाई के परिणामस्वरूप सामान्य वर्षा के दौरान भी भूस्खलन के कारण मौजूदा कई सड़कें क्षतिग्रस्त हो गई हैं, इस प्रकार भारी बारिश अथवा बाढ़ की स्थिति में होने वाले वनीश की तीव्रता काफी बढ़ गई है।
    - पहले पहाड़ों में सीढ़ीदार और घुमावदार सड़कें होती थीं जो भूस्खलन के प्रति कुछ हद तक सुरक्षित थीं लेकिन खड़ी सड़कें भूस्खलन एवं कटाव के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं।
- सीमेंट संयंत्र:
  - बड़े पैमाने पर सीमेंट संयंत्रों की स्थापना तथा व्यापक स्तर पर पहाड़ों के कटान ने भूमि उपयोग के पैटर्न को बदल दिया है जिससे भूमि की जल अवशोषण क्षमता कम हो गई है तथा वर्षा के दौरान आकस्मिक बाढ़ की संभावनाएँ बढ़ी हैं।
- फसल पैटर्न में परिवर्तन:
  - पारंपरिक अनाज की खेती के बजाय नकदी फसल तथा बागवानी अर्थव्यवस्थाओं में बदलाव, जिनका परिवहन कम समय-सीमा के भीतर बाजारों में करना पड़ता है क्योंकि वे जल्दी खराब हो जाते हैं।
  - उचित भूमिकटाई तथा जल निकासी के बिना नकदी फसलों या बड़े कृषिक्षेत्रों के लिये जलदबाज़ी में सड़क निर्माण के कारण वर्षा के दौरान नदियों में तेज़ सैलाब के चलते बाढ़ की संभावना बढ़ जाती है।

## आकस्मिक बाढ़ से नपिटने के लिये सरकारी पहल:

- राष्ट्रीय बाढ़ जोखिम न्यूनीकरण परियोजना (NFRMP)
- [राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन योजना \(NDMP\)](#)
- [राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण \(NDMA\)](#)
- [भारतीय मौसम विज्ञान विभाग \(IMD\)](#)
- [राष्ट्रीय बाढ़ प्रबंधन कार्यक्रम](#)
- राष्ट्रीय बाढ़ आयोग (राष्ट्रीय बाढ़ आयोग-1976)

## आगे की राह

- प्रमुख हतिधारकों को शामिल करते हुए एक जाँच आयोग गठित करना, जो स्थानीय समुदायों की संपत्तियों पर उनके अधिकार को सशक्त बनाने के साथ त्वरित पुनर्निर्माण की सुविधा के लिये संपत्तियों का बीमा प्रदान करे। जलवायु परिवर्तन की वास्तविकता पर विचार करते हुए आपदाओं को रोकने के लिये बुनियादी ढाँचे की योजना में पर्याप्त बदलाव भी महत्त्वपूर्ण हैं।
- जलवायु परिवर्तन को एक वास्तविकता के रूप में देखते हुए लोगों को समस्या को नहीं बढ़ाना
- चाहिये, बल्कि राज्य में पछिले कुछ समय से देखी जा रही आपदाओं को रोकने के लिये बुनियादी ढाँचे की योजना में पर्याप्त बदलाव करना चाहिये।

## [स्रोत: द दृष्टि](#)